लिए डी. ए. पी. (DAP) @100 किलो प्रति हेक्टेयर, एम. ओ. पी. (MOP) @ 33 किलो प्रति हेक्टेयर डालना चाहिए। मूंग की खेती के लिए सल्फर @ 25 किलो प्रति हेक्टेयर एवं अनु खाद जैसे जस्ता @ 2.5 किलो प्रति हेक्टेयर और बोरॉन @ 0.5 किलो प्रति हेक्टेयर का प्रयोग लाभदायक होता है।

सिंचाई: ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल को सामान्यतः 1–2 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद तथा दूसरी सिंचाई 20–25 दिन बाद करनी चाहिए। फूल आने और दाना बनने की अवस्था में सिंचाई विशेष रूप से आवश्यक होती है।

खरपतवार नियंत्रण:

खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडिमेथलीन (@ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी) अंकुरण के पूर्व प्रयोग करना आवश्यक है। बुआई के 20–25 एवं 40–45 दिन बाद दो निराई-गुड़ाई करना लाभदायक होता है। इससे खरपतवारों का नियंत्रण होता है और पौधों की वृद्धि होती है।

कटाई एवं उत्पादन: ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल सामान्यतः 60–70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। जब अधिकांश फलियाँ (80%) काली या भूरी हो जाएँ तब फसल की तुराई कर लेनी चाहिए। इस फसल मे 2-3 बार तुराई की जाती है। कटाई के बाद फलियों को 3-4 दिन तक धूप मे सुखाकर मड़ाई की जाती है।

उचित प्रबंधन अपनाने पर ग्रीष्मकालीन मूंग से लगभग 10–15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

दलहनी फसलों की बढ़ती मांग के कारण बाजार में मूंग की कीमत भी अच्छी मिलती है। सरकार भी दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चला रही है। उन्नत किस्मों का चयन, उचित समय पर बुआई, संतुलित उर्वरक प्रबंधन तथा उचित सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण अपनाकर ग्रीष्मकालीन मूंग से अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

सम्पर्क करें :-
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, सिपाया (गोपालगंज)
मो.- +91 6287797171

प्रसार पुस्तिका- RPCAU/2025/0044

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती एवं संभावनाएँ

श्रीप्रिया दास
विषय वस्तु विशेषज्ञ, फसल उत्पादन

अनुपमा कुमारी
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

नवीन कुमार
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियांत्रिकी

अनीता गौतम
विषय वस्तु विशेषज्ञ, गृह विज्ञान

अभिषेक राणा
विषय वस्तु विशेषज्ञ, पौधा सरंक्षण

रविकांत कुमार
प्रक्षेत्र प्रबंधक

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिपाया, गोपालगंज
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर (बिहार)-848125

Scanned with OKEN Scanner

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ दलहनी फसलों का विशेष महत्व है। दलहनी फसलें न केवल मानव आहार के लिए महत्वपूर्ण हैं बल्कि मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में भी सहायता करती हैं। इसके बावजूद भारत दलहनी फसलों के उत्पादन मे आत्मनिर्भर नहीं है। मूंग भारत की प्रमुख दलहनी फसलों में से एक है, जिसे खरीफ, रबी तथा ग्रीष्म मौसमों में उगाया जा सकता है। इनमें से ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती विशेष रूप से लाभदायक मानी जाती है क्योंकि यह कम समय और लागत में तैयार हो जाती है और किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करती है।

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती रबी फसलों जैसे गेहूँ, आलू या सरसों की कटाई के बाद खाली पड़े खेतों का उपयोग करने का एक अच्छा विकल्प है। यह फसल लगभग 60–70 दिनों में तैयार हो जाती है, जिससे किसान कम समय में अधिक उत्पादन और लाभ प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही यह फलीदार फसल भूमि की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायता करती है क्योंकि इसकी जड़ों में उपस्थित राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन का मिट्टी मे स्थिरीकरण करते हैं और इस फसल को जुताई कर मिट्टी मे मिलाने से पोषक तत्वों की मात्रा भी बढ़ती है।

ग्रीष्मकालीन मूंग का कृषि और पोषण दोनों क्षेत्रों में अत्यधिक महत्व है। मूंग के दाने प्रोटीन, विटामिन तथा खनिज तत्वों से भरपूर होते हैं, इसलिए यह मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी माना जाता है । भारत में शाकाहारी भोजन में प्रोटीन की कमी को दूर करने के लिए मूंग एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती

उपयुक्त जलवायु एवं भूमि: ग्रीष्मकालीन मूंग की सफल खेती के लिए गर्म एवं शुष्क जलवायु उपयुक्त मानी जाती है। इस फसल के लिए लगभग 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त रहता है। अधिक वर्षा या अत्यधिक नमी इस फसल के लिए हानिकारक होती है। अच्छी जल निकास वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी इस फसल की खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। जलभराव वाली भूमि मूंग के लिए उपयुक्त नहीं होती।

भूमि की तैयारी: ग्रीष्मकालीन मूंग की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए खेत की उचित तैयारी आवश्यक होती है। रबी फसल की कटाई के बाद खेत की एक गहरी जुताई करनी चाहिए। इसके बाद 1-2 बार हल या कल्टीवेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए। अंतिम जुताई के समय खेत को समतल कर देना चाहिए ताकि सिंचाई समान रूप से हो सके।

उन्नत किस्में: ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिए कई उन्नत किस्में विकसित की गई हैं जो अधिक उत्पादन देने के साथ-साथ रोगों के प्रति सहनशील भी होती हैं। प्रमुख किस्मों में सम्राट, पंत मूंग-5, पंत मूंग-8, नरेंद्र मूंग-1, तथा विराट आदि शामिल हैं। इन किस्मों का चयन क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। उन्नत किस्मों के प्रयोग से उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

बुआई का समय एवं विधि: ग्रीष्मकालीन मूंग की बुवाई सामान्यतः फरवरी के मध्य से अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक की जाती है। समय पर बुवाई करने से फसल का अच्छा विकास होता है और उत्पादन अधिक प्राप्त होता है। बुवाई पंक्तियों में करनी चाहिए। पंक्ति से पंक्ति की दूरी लगभग 30 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी होनी चाहिए। बीज की मात्रा लगभग 25–30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है।

बीजोपचार: बीजों को बुवाई से पहले राइजोबियम तथा पी. एस. बी. (PSB) कल्चर (@ 200 ग्राम प्रति 10 किलोग्राम बीज) से उपचारित करने से नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता बढ़ती है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

उर्वरक एवं पोषक तत्व प्रबंधन: खेत की तैयारी से 10–15 दिन पहले गोबर की सड़ी हुई खाद (8–10 टन प्रति हेक्टेयर) का प्रयोग करना लाभदायक रहता है। रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही किया जाना चाहिए। प्रारंभिक वृद्धि के

Scanned with OKEN Scanner